ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 11, Issue 1 January 2021 Impact Factor 7.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी अध्ययन की आदतों, पर प्रभाव का अध्ययन

शोध निर्देशिका

डॉ0 बीना कुमारी
एम.ए., एम.एड., एम.फिल., पी–एच.डी.
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

शोधार्थी

विवेक सारस्वत
एम.ए. (शिक्षाशास्त्र)

आज के बालक को देश का भावी सुयोग्य नागरिक बनाने की जिम्मेदारी परिवार, विद्यालय एवं समाज की है। किन्तु पारिवारिक परिवेश की अपेक्षा विद्यालयी परिवेश में अध्ययन की आदतों, संवेगों की परिपक्वता तथा नैतिक मूल्यों को विकसित एवं परिष्कृत करने की अद्भुत सामर्थ्य होती है। भारतीय समाज आज मूल्यों की त्रासदी से गुजर रहा है। यह संक्रमण काल है जिसमें आवश्यक है कि छात्र अनौपचारिक एवं आनुषंगिक रूप से जो सीख रहे हैं, उसका सामाजिक, राष्ट्रीय एवं दैनिक जीवन में महत्व होना चाहिए।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध समस्या निम्नवत् है :–

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी अध्ययन की आदतों पर प्रभाव का अध्ययन।''

शोध अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद अलीगढ़ के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली से सम्बद्ध इण्टरमीडिएट कॉलेजों में अध्ययनरत कक्षा–9 के उन छात्रों पर किया गया है, जो वर्ष 2009 की वार्षिक परीक्षा में कक्षा–9 के प्रमाण–पत्र हेतु सम्मिलित हुए थे। अर्थात् प्रस्तुत शोध का समग्र जनपद अलीगढ़ के उन विद्यार्थियों से निर्मित किया गया है, जो सी0बी0एस0ई0 द्वारा मान्यता प्राप्त वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में वर्ष 2009 के अन्तर्गत कक्षा–9 में अध्ययनरत थे।

प्रस्तुत शोधकार्य मनोसामाजिक प्रकृति का होने से साथ–साथ सर्वेक्षणात्मक प्रकृति का भी है। अतः शोधकर्ता ने साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा निदर्शित सूचनादाताओं से सूचनायें संकलित की हैं तथा मनोवैज्ञानिका परीक्षणों के आधार पर भी निष्कर्ष प्राप्त किये हैं। शोधकार्य सम्पन्न करने हेतु वैज्ञानिक विधि के सभी महत्वपूर्ण चरणों का अनुप्रयोग करने का प्रयास किया गया है। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने अनुसन्धान के क्षेत्र में वर्णनात्मक सर्वेक्षण का महत्व सबसे अधिक माना है। इस सम्बन्ध में जी0जे0 मोले के अनुसार, ''शैक्षिक अनुसन्धान

के अन्तर्गत वर्णनात्मक अनुसन्धान जितना महत्वपूर्ण है, उतना महत्व किसी दूसरे प्रकार की अनुसन्धान विधि का नहीं है, यह एक वृहद वर्गीकरण है, जिसमें विशिष्ट तकनीकि एवं प्रविधियाँ समाहित रहती हैं, जो किसी घटना के परीक्षण के लिये आवश्यक है।''[8]

प्रतिदर्श एवं उपकरणों का चयन

शोध कार्य सम्पादित करने में समग्र की समस्त इकाइयों से सम्पर्क करना प्रायः कठिन होता है तथा इससे समय व धन का अपव्यय भी होता है। अतः समय एवं धन के दुरुपयोग की सम्भावना से बचने के लिये समग्र की इकाइयों में से प्रतिदर्श का निकालना शोध कार्य की आवश्यकता होती है। समग्र का पूर्ण प्रतिनिधित्व करने वाला प्रतिदर्श अच्छा माना जाता है। अच्छे एवं उपयुक्त प्रतिदर्श में समग्र की प्रत्येक इकाई को चुने जाने की पूर्ण प्राथमिकता होती है।

समग्र से न्यादर्श प्राप्त करने की प्रक्रिया के अन्तर्गत अलीगढ़ जनपद के सी0बी0एस0ई0 दिल्ली से सम्बद्ध सभी इण्टरमीडिएट कालेजों की सूची संयुक्त निदेशक कार्यालय से प्राप्त की। जनपद में ऐसे विद्यालयों की संख्या काफी अधिक होने के कारण लाटरी विधि द्वारा कुल छः विद्यालयों का चयन किया गया, जिनकी सूची सारणी में प्रस्तुत की गयी है।

चयनित विद्यालयों का विवरण

क्रमांक	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएँ	योग
1.	सेण्ट फिदेलिस स्कूल, अलीगढ़	1800	2200	4000
2.	विजडम पब्लिक स्कूल, अलीगढ़	2000	1800	3800
3.	हेरिटेज पब्लिक स्कूल, अलीगढ़	1800	1400	3200
4.	इंग्राहम इन्स्टीट्यूट, अलीगढ़	1300	1200	2500
5.	कृष्णा इण्टरनेशनल स्कूल, अलीगढ़	1100	900	2000
6.	ब्रिलिएण्ट पब्लिक स्कूल, अलीगढ़	900	900	1800
	कुल योग	8900	8400	17300

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में यद्यपि अनेक परीक्षणों का प्रयोग किया जाता रहा है जिनमें निम्नलिखित परीक्षण मुख्य है।

1. उपलब्धि परीक्षण
2. बुद्धि परीक्षण
3. अभियोग्यता परीक्षण
4. अभिवृत्ति मापनी
5. व्यक्तित्व तालिका आदि।

किन्तु शोध समस्या के चरों को दृष्टिगत रखते हुए इन मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की उपयोगिता संदिग्ध होने के कारण निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रामाणिक परीक्षणों को उपयोग में लाया गया है :–

1. के0एस0 मिश्र द्वारा निर्मित स्कूल एन्वायरनमेण्ट इन्वेन्ट्री (S.E.I.)
2. एम0एन0 पालसेन एवं एस0 शर्मा द्वारा निर्मित स्टडी हैविट इन्वेन्ट्री (P.S.S.H.I.)

उपकरणों का परिचय एवं प्रशासन

प्रस्तुत शोध एक मनोशैक्षिक अध्ययन है। ऐसे शोध में मनोवैज्ञानिक परीक्षण को प्रयुक्त करना एक आवश्यकता होती है, जिससे व्यक्तिगत भिन्नता का मापन करना एवं उसकी व्याख्या करना सम्भव होता है। जे0डब्ल्यू0 बेस्ट ने वैज्ञानिक परीक्षण को परिभाषित करते हुए कहा है, "The Psychological test is an instrumental design to describe and measure a sample of certain aspects of human behaviour."[12]

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी अध्ययन की आदतों, संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों पर प्रभाव ज्ञात किया गया है। इस संदर्भ में प्रयुक्त प्रामाणिक परीक्षणों का विवरण निम्नवत् है :–

1. विद्यालयी परिवेश के मापन हेतु प्रमापीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण – School Environment Inventory (S.E.I.), डॉ0 के0एस0 मिश्र द्वारा निर्मित।
2. अध्ययन की आदतों के मापन हेतु एम0एन0 पालसेन तथा एस0शर्मा द्वारा निर्मित Study Habit Inventory (PS-SH1).

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ तथा उद्देश्य अग्रलिखित हैं :–

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निरूपित किये गये हैं :–

उद्देश्य 1 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य 1.1 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य 1.2 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की अधिगम की युक्तियों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य 1.3 :

विद्यार्थियों को विद्यालयी परिवेश का उनकी स्मृति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य 1.4 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के समयबद्ध अध्ययन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य 1.5 :

विद्यालयी परिवेश विद्यार्थियों के अध्ययन की भौतिक अवस्थाओं पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य 1.6 :

विद्यार्थियों को विद्यालयी परिवेश का उनकी परीक्षा एवं मूल्यांकन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनायें

शोध परिकल्पनायें, किसी शोध में दिशा निर्देशक का कार्य करती हैं। यह किसी शोध समस्या का टेन्टेटिव उत्तर होती हैं। प्रस्तुत शोध में शून्य परिकल्पना का परीक्षण एवं अनुप्रयोग किया जा रहा है।

शोध परिकल्पना 1 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पना 1.1 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पना 1.2 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके अधिगम की युक्तियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पना 1.3 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके स्मृति स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पना 1.4 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी समयबद्धता युक्त अध्ययन की आदतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पना 1.5 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी अध्ययन की भौतिक अवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 11, Issue 1 January 2021 Impact Factor 7.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

शोध परिकल्पना 1.6 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके स्वयं की परीक्षा और मूल्यांकन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में संकलित सूचनाओं के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों को प्रयोग में लाया गया है। केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापन हेतु माध्य का प्रयोग किया गया है।

(i) माध्य (Mean)

किसी प्रदत्त संकलन के समस्त अंकों के योगफल को उनकी संख्या से भाग देने पर अंक गणितीय माध्य प्राप्त होता है। सांकेतिक रूप में इसे निम्नवत् प्रदर्शित किया गया है।

$$M = a + \frac{\Sigma fd}{\Sigma f} \times h$$

जहाँ M का तात्पर्य माध्य

a = कल्पित माध्य

d = कल्पित माध्य से विचलन

Σf = बारम्बारताओं का योग

Σfd = विचलन तथा संगत बारम्बारता के गुणनफल का योग

h = वर्गान्तर

वर्गान्तर को वर्ग अन्तराल की उच्चसीमा से निम्न सीमा को घटाकर प्राप्त किया गया है।

(ii) मध्यांक (Median)

किसी समूह के प्राप्ताओं को आकार के अनुसार आरोही क्रम में सजाकर यदि वह बिन्दु प्राप्त किया जाये जिससे आगे तथा पीछे बराबर प्राप्तांक हो तो उसे मध्यांक कहते हैं। अवर्गीकृत आँकड़ों के लिये –

$$\text{मध्यांक} = \frac{(n+1)}{2} \text{ वें पद का मान (जहाँ n एक विषम संख्या है)}$$

$$= \frac{\left(\frac{n}{2}\right) \text{ वाँ पद} + \left(\frac{n}{2}+1\right) \text{ वाँ पद}}{2} \quad \text{(जहाँ n एक सम संख्या है)}$$

वर्गीकृत आँकड़ों के लिये –

$$\text{मध्यांक} = l + \frac{\left(\frac{n}{2} - CF\right)}{f} \times h$$

जहाँ n = कुल संख्या
l = मध्यांक वर्ग की निम्न सीमा
f = मध्यांक वर्ग की बारम्बारता
CF = मध्यांक वर्ग से पिछले वर्ग की संचयी बारम्बारता
तथा h = वर्गान्तर है

(iii) मानक विचलन (Standard Deviation)

दिये हुये प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्तांकों के विचलनों के वर्गों के मध्यमान का वर्गमूल मानक विचलन कहलाता है।

$$\text{S.D.} = \left\{\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \frac{(\Sigma fd)^2}{N}}\right\} \times h$$

जहाँ S.D. = मानक विचलन
h = वर्गान्तर
Σfd^2 = विचलनों के वर्ग एवं आवृत्तियों के गुणनफल का योग
Σfd = आवृत्तियों एवं विचलनों के गुणनफल का योग
तथा N = प्राप्ताकों की संख्या है।

(iv) सह सम्बन्ध (Correlation)

दो या दो से अधिक चर राशियों, घटनाओं या वस्तुओं के पारस्परिक सम्बन्ध को सह–सम्बन्ध कहते हैं। गिलफोर्ड के अनुसार, ''सह–सम्बन्ध गुणांक वह अकेली संख्या है जो यह प्रकट करती है कि दो वस्तुएँ किसी सीमा तक एक दूसरे के साथ सम्बन्धित हैं तथा एक के परिवर्तन के कारण दूसरे के परिवर्तन को किस सीमा तक प्रभावित करती हैं।''

सह–सम्बन्ध की गणना विमा दो विधियों द्वारा की जाती है –

(a) स्थान क्रमविधि :

$$P = 1 - \frac{6\Sigma d^2}{N(N^2-1)}$$

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 11, Issue 1 January 2021 Impact Factor 7.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

(b) वास्तविक मध्यमान विधि :

$$r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 \, \Sigma xy^2}}$$

(v) t की गणना

प्रतिदर्श की संख्या 30 से कम होने पर अर्थात् समूह होने पर cr के स्थान पर t की गणना की जाती है जिसके लिये निम्न सूत्र प्रयोग किया गया है –

$$t = \frac{M_1 + M_2}{\sqrt{\frac{\Sigma d1^2 + \Sigma d2^2}{N_1 + N_2 + \ldots\ldots} \left(\frac{N_1 + N_2}{N_1 N_2}\right)}}$$

यहाँ M_1, M_2 तथा d_1, d_2 पूर्ववत् अर्थ में प्रयोग किये गये हैं।

इस प्रकार शोध प्रबन्ध में सांख्यिकीय विधियों का उचित प्रयोग किया गया है। यथा स्थान बारम्बारता वक्र, बहुभुज, पाई चार्ट आदि का भी प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को आरम्भ में क्रमवार प्रस्तुत किया गया था। उसी क्रम में शोध निष्कर्षों की प्राप्ति आगे प्रस्तुत की जा रही है :–

उद्देश्य 1 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 1 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष : शोध के प्रथम उद्देश्य से सम्बन्धित आँकड़ों को सारणी संख्या 4.13 में व्यवस्थित किया गया है, जिसमें t= 3.929 एवं p= 0.0001 प्राप्त हुआ तथा परिकल्पना खण्डित हुयी। अतः निष्कर्ष स्थापित होता है कि विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों पर सार्थक एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यदि विद्यालय का परिवेश अध्ययन के अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करने में सक्षम है तो वहाँ के विद्यार्थी अधिक अच्छा कर सकते हैं।

उद्देश्य 1.1 :

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 11, Issue 1 January 2021 Impact Factor 7.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 1.1 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष : विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत पर भी सार्थक प्रभाव देखा गया। जिन विद्यालयों में शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य के द्वारा शिक्षानुकूल परिवेश तैयार किये गये हैं, वहाँ छात्र अपने समय का अधिकतम उपयोग पढ़ने में करते हैं । रिक्त कालांश में छात्र एवं छात्राएँ पुस्तकालय में जाकर अपने विषय से सम्बन्धित पुस्तकें प्राप्त कर पढ़ते हैं तथा कुछ छात्र दैनिक समाचार पत्रों को पढ़ते हैं तो छात्राएँ प्रायः पत्रिकाओं को पढ़ती हैं।

उद्देश्य 1.2 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की अधिगम की युक्तियों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 1.2 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके अधिगम की युक्तियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष : इस परिकल्पना के खण्डित होने के पश्चात यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जाता है कि विद्यालयी परिवेश विद्यार्थियों की अधिगम की युक्तियों को प्रभावित करता है। विद्यालय जितनी अधिक प्रकार की सामग्री विद्यार्थियों को उपलब्ध कराते हैं, छात्र उस सामग्री का अधिक प्रयोग कर पाते हैं। छात्रा इरिका के अनुसार, ''यदि हमारे विद्यालय में कैसियो और बौंगों जैसे वाद्य यन्त्र न होते तो मुझे संगीत में कभी रुचि पैदा नहीं होती।''

उद्देश्य 1.3 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी स्मृति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 1.3 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके स्मृति स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष : स्मृति स्तर पर भी विद्यालयी परिवेश का सार्थक प्रभाव पाया गया। जब कक्षा में अध्यापक विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछते हैं और प्रश्न बार–बार पूछे जाते हैं, तो छात्रों का स्मृति स्तर भी बढ़ता है । यदि अध्यापक छात्रों को केवल पढ़ाता रहे, बीच में अधिगम का मूल्यांकन न करे तो विद्यार्थियों की स्मृति की नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती है।

उद्देश्य 1.4 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के समयबद्ध अध्ययन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 1.4 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी समयबद्धता युक्त अध्ययन की आदतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष : समयबद्धता को सभी विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण माना। विद्यालयी परिवेश में समयबद्धता का सार्थक प्रभाव पड़ता है । जब विद्यार्थी समय के अन्तर्गत कार्य करना सीखते हैं तो उनकी कार्य क्षमता भी बढ़ती है तथा जीवन में विशिष्ट अनुशासन आता है, इसलिये हर छात्र को समयबद्धता का ध्यान रखना चाहिए तथा अपना प्रत्येक कार्य समयसीमा के अन्दर ही समाप्त करना चाहिए।

उद्देश्य 1.5 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के अध्ययन की भौतिक अवस्थाओं पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 1.5 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी अध्ययन की भौतिक अवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष : उपर्युक्त परिकल्पना खण्डित हो चुकी है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यालयी परिवेश विद्यार्थियों की अध्ययन की भौतिक अवस्थाओं को प्रभावित करता है।

उद्देश्य 1.6 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी परीक्षा एवं मूल्यांकन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना : 1.6 :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके स्वयं की परीक्षा एवं मूल्यांकन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष : यह परिकल्पना खण्डित होने के उपरान्त निष्कर्ष यह है कि विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की परीक्षा एवं मूल्यांकन पर प्रभाव पड़ता हैयदि परीक्षा सुचारू रूप से करायी जाती है तथा मूल्यांकन भी उचित तरीके से होता है तो छात्र अच्छा प्रतिशत अथवा 10 CGPA पाने की इच्छा करते हुए अनुरूप प्रयास भी करते हैं जिससे उनका लब्धि स्तर बढ़ता है।

उद्देश्य 1.7 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 1.7 :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

निष्कर्ष : शोधार्थी ने पाया कि विद्यालयी परिवेश विद्यार्थियों के स्वास्थ्य को भी सार्थक रूप से प्रभावित करता है । यदि विद्यालय का इन्फ्रास्ट्रक्चर ठीक नहीं है, खेल का मैदान पर्याप्त नहीं है, कमरों में प्रकाश एवं हवा की उचित व्यवस्था नहीं है तो विद्यार्थी के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की सम्भावना कई गुना बढ़ जाती है क्योंकि छात्र लगभग 7 घण्टे तक इसी वातावरण में प्रतिदिन व्यतीत करता है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी अध्ययन की आदतों, संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किये जा चुके हैं, प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शोधोपरान्त निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जिनके अवलम्बन में छात्रों में अध्ययन की आदतों को अधिक प्रभावी किया जा सकता है। संवेगात्मक परिपक्वता में निखार लाया जा सकता है एवं नैतिक मूल्यों में सुधार की सम्भावना अधिक की जा सकती है।

(a) विद्यार्थियों के लिये सुझाव

1. विद्यालय में आयोजित होने वाली साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने से व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। अतः प्रत्येक छात्र एवं छात्रा को इन क्रियाकलापों में भाग लेना चाहिए।
2. प्रत्येक छात्र एवं छात्रा को शिक्षण सम्बन्धी एवं विद्यालयीन सम्बन्धी समस्याओं से अभिभावकों एवं प्राध्यापकों को समय–समय पर अवगत कराना चाहिए ताकि उनका समय पर समाधान किया जा सके।
3. छात्रों एवं छात्राओं को विद्यालय परिवेश सुधारने में सहभागिता करनी चाहिए। अपने माता–पिता तथा संरक्षकों के कार्यों में सहयोग करते हुए उन्हें अपनी शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करने के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। इसके लिए उन्हें अपनी आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रस्थिति तथा अन्य शैक्षिक तथ्यों से विचलित हुए बिना अपना कार्य करना चाहिए।
4. विद्यालय की आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर छात्रों एवं छात्राओं को विद्यालय के पुस्तकालय का भरपूर अनुप्रयोग करना चाहिए तथा सरकार द्वारा चलाये गये अनेक शैक्षिक उन्नयन के कार्यक्रमों में सहभागिता करके अपनी शैक्षिक उपलब्धि को अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए।
5. छात्रों एवं छात्राओं में स्वावलम्बन का भाव जाग्रत होना चाहिए और उन्हें अच्छे समाजोपयोगी कार्य करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। इससे जहाँ एक ओर उनमें तत्परता, आत्मविश्वास बढ़ेगा, वहीं दूसरी ओर वे हीनभावना के शिकार होने से बचेंगे।

6. छात्रों एवं छात्राओं को यह सुझाव दिया जाता है कि वे कोर्स के अतिरिक्त दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओं के प्रति जागरूक रहें और भारत में प्रचलित लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति अपने ज्ञान के स्तर को बढ़ायें। यही नहीं उन्हें राष्ट्र स्तर पर क्रियाशील राजनैतिक दलों, उनके चुनाव घोषणा पत्रों, नीतियों, उनके नैतिकता का स्तर, कथनी और करनी में अन्तर आदि को दृष्टिगत रखते हुए अपने मत व्यवहार को निर्धारित करना चाहिए।

(b) प्रधानाचार्यों के लिये सुझाव

प्रधानाचार्य को साप्ताहिक रूप से छात्रों के माता–पिता तथा अभिभावकों को विद्यालय में बुलाना चाहिए और वहाँ उनमें शैक्षिक, सामाजिक तथा अन्य महत्वपूर्ण मूल्यों की स्थापना के प्रयास किए जाने चाहिए। प्रधानाचार्य द्वारा सप्ताह में एक दिन विद्यालय के सभी छात्रों को किसी विषय विशेष पर भाषण आदि देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इसमें उनमें आत्म–अनुशासन, सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति सहज प्रवणता तथा आत्मविश्वास का विकास होगा।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा जहाँ छात्रों एवं छात्राओं में अनेक वैयक्तिक मूल्यों का विकास होता है, वहीं विविध शैक्षिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक आदि मूल्यों का सृजन भी होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा छात्रों एवं छात्राओं में अनेक सामुदायिक मूल्य विकसित होते हैं, जिससे न केवल उनके व्यक्तित्व का विकास होता है, अपितु उनके विद्यालय परिवेश में भी वांछित तथा सार्थक परिवर्तन होता है। अतः खेलकूद, नृत्य, प्रवचन, नाटकों का मंचन, सामान्य ज्ञान परीक्षा, टूर आदि पर जोर दिया जाना चाहिए। ताकि छात्रों एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो सके और अपने विषयों के अतिरिक्त उन विषयों के प्रति भी रूझान उत्पन्न हो, जो उनके लिए उपयोगी होते हैं।

प्रधानाचार्यों को चाहिए कि वे विद्यालय में एक सुसज्जित पुस्तकालय विकसित करें। इसके लिए छात्रों एवं छात्राओं को अध्ययन के प्रति जागरुक बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। आज स्नातक स्तर पर पुस्तकालयों की स्थिति इस प्रकार की है कि कुछ अल्मारियों में पुस्तकें रख दी गई हैं। छात्रों को उन पुस्तकों को पढ़ने का अवसर ही नहीं दिया जाता। शायद ही कोई विद्यालय ऐसा हो, जहाँ दैनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक पत्रिकायें, मासिक पत्रिकायें आदि छात्रों एवं छात्राओं को पढ़ने के लिए दी जाती है।

(c) अध्यापकों के लिये सुझाव

शिक्षक वह होता है जो अन्तःक्रियाओं के माध्यम से न केवल ज्ञान प्रदान करता है, अपितु अपने छात्रों का सर्वांगीण विकास करता है। अन्तःक्रियायें बहुआयामी होती हैं। कुछ

अन्तःक्रियायें छात्र के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती हैं और उसे समाज का सुनागरिक बनाती हैं। लेकिन कुछ अन्तःक्रियायें छात्र के व्यक्तित्व को इस प्रकार से निर्मित करती हैं कि वह समाज के अनुकूल न होकर विपथगामी हो जाता है। अतः यहाँ अध्यापक का दोहरा कर्तव्य बनता है। एक ओर उसे इन कुत्सित अन्तःक्रियायें पर नियंत्रण करना होता है, वहीं दूसरी ओर छात्र को वह उपयोगी अन्तःक्रियाओं के सम्पर्क में लाता है। अतः छात्र के लिए शिक्षक अन्य अभिकरणों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होता है। शिक्षक का कार्य छात्रों एवं छात्राओं में केवल ज्ञान हस्तान्तरित करना ही नहीं है, अपितु अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को हस्तान्तरित करना होता है। अतः इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं :–

1. अध्यापक का व्यक्तित्व गरिमामय होना चाहिए। जिसके गुण, शील, विवेक के सम्मुख हर मस्तक नत हो सके। उसका व्यक्तित्व एवं आचरण उस दीपक की भांति है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है। अस्तु सर्वप्रथम शिक्षक को व्यवसायिक मानसिकता से मुक्ति पाना आवश्यक है।
2. अध्यापक को छात्रों एवं छात्राओं के समक्ष सदैव आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। उनके व्यक्तित्व में अनेक कमियाँ हो सकती हैं, किन्तु उन कमियों को छात्रों में अन्तरीकृत नहीं होने देना चाहिए।
3. अध्यापक का दायित्व केवल ज्ञान का प्रकाश फैलाना ही नहीं, अपितु राष्ट्र के लिए आदर्श नागरिक तैयार करना भी है। इस दृष्टि से भी शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है।
4. अध्यापक को केवल विषय का ज्ञान ही नहीं देना चाहिए अपितु राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय तथा समाज के अन्दर होने वाली घटनाओं के बारे में भी छात्रों के सामान्य ज्ञान का स्तर उठाने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि ऐसा न करने पर छात्र समाज से विरत हो जाते हैं और उनका अवधान केवल विषय वस्तु तक ही केन्द्रित रहता है।
5. अध्यापकों को वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सौन्दर्यात्मक आदि मूल्यों की शिक्षा व्यावहारिक रूप से देनी चाहिए। एक अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मनोविज्ञान का ज्ञाता हो।

शोध संदर्भ

1. वेबस्टर शब्द कोष
2. सामाजिक विज्ञानों का शब्द कोष, 1950
3. पी0वी0 यंग, सामाजिक अनुसन्धान, पृ0सं0 44
4. पूर्ववत, पृ0सं0 75
5. जी0ए0 लुण्डवर्ग, सोशल रिसर्च, पृ0सं0 09

6. ऑक्सफोर्ड शब्द कोष
7. एफ0एन0 करलिंगर, फाउण्डेशन्स ऑफ बीहेवरल रिसर्च, पृ0सं0 382
8. Mouley, G.J., 1963. The Science of Educational Research, p. 231.
9. Best, J.W. Research in Education, p. 102.
10. भारद्वाज, कृष, सासनी गेट, अलीगढ़ (उम्र 9 वर्ष)
11. Lundburg, G.A. op.cit. p. 183.
12. Best, J.W. Research in Education, p. 111.
13. Anderson, G.J., 1968. Effects of Classroom Social Climate on Individual Learning, Dessertation, Hardward University.
14. Ibid., p. 59.
15. Mishra, K.S., 1978. Anti Creativity Climate Creativity, News Letter, 79, 7-8, (2,1), 41, 43.
16. Morgana, C.T., 1957. How to Study, Mc-Graw Hill, New York.
17. Seoul, L.J., 1951. Emotional Maturity, The Development and Dynamics of Personality, London, J.B. Lippincott.
18. Bhargava, M., 2007. Exceptional Children (Hindi), Agra, H.P. Bhargava Book House.
19. Singh, A.K., 1997. Tests, Measurement and Research Methods in Behavioural Sciences, Bharti Bhavan, Patna.
20. Freud, S., 1933. Introductory Lectures to Psychoanalysis, New York, Norton.
21. Pearson, Karl, 1896. The moral Basis of Socialism, University Press of the Pacific, London.
22. Bhargava, M., 2010. Modern Psychological Testing and Measurement (Hindi).
23. Guilford, J.P., 1954. Psychometric Methods, New York, McGraw Hill Book Co.